• बाल कविता...

आइस क्रीम वाला...

ले लो आइस-क्रीम कह रहा।
देखो आ चला रहा पथ पर॥
कड़ी दोपहरी धरती तपती।
गरम गरम झोंके लू चलती॥
वस्त्र भीगकर तन से चिपके।
हुआ पसीने से ऐसा तर॥
देखो चला...
गाड़ी बन्द ढुलकती आती।
इसमें उसके श्रम की ढाती॥
शीतलता है साथ-साथ है तर॥
नहीं कंठ भी करता है तर॥
देखो चला...
ठंडक तो औरों के हित है।
गरमी में ही उसका हित है।
यही जीविका इसकी भाई।
इस पर इसका जीवन निर्भर॥
देखो चला...
लोग घरों में पड़े सो रहे।
सुख सपनों में पड़े खो रहे॥
लेकिन वह आवाज लगाता।
चलता ही जाता है पथ पर॥
देखो चला...

-सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

• चुटकुले...

आज 8 बजे कुत्तों की रेस है। मुझे वहां जाना है।
पत्नी : आप भी ना हद करते हो। ठीक से चला जाता नहीं और रेस लगाने की पड़ी है।

😃😃😃

शादी में DJ पर गाना बज रहा था, जिसको डांस नही करना वो जाकर अपनी भैंस चराये...
पति पत्नी से बोला-
आओ डार्लिंग खाना खाते हैं।

😃😃😃

एक बच्चा नल से गिरते हुए पानी को देखकर बोला, पापा यह पानी कहां से आता है?
पापा- बेटा, नदी से।
बच्चा- पापा, मुझे नदी दिखाने ले चलो।
उसके पापा उसे नदी दिखाने ले गए, लेकिन बच्चे ने उन्हें नदी मे गिरा दिया। फिर बच्चा दौड़कर घर गया, और ममी से बोला, ममी, जल्दी से नल खोलो, पापा आ रहे होंगे।

• जानकारी...

मानसून ...

तपती गर्मी से तो बारिश का मौसम ही निजात दिला सकता है। पशु, पक्षी, खेत सभी को मानसून यानि बरसात का इंतजार रहता है। तुम्हें भी बरसात का मौसम अच्छा लगता होगा। बारिश में भीगना और फिर चारों ओर फैली हरियाली देखकर मन कितना खुश हो उठता है।

हिंद महासागर और अरब सागर से भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर आने वाली हवाओं को मानसून कहते हैं। ये हवाएं पानी वाले बादल ले आती हैं, जो भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश यानी भारतीय उपमहाद्वीप में बरसते हैं। मानसून ऐसी मौसमी पवन है, जो दक्षिणी एशिया क्षेत्र में जून से सितंबर तक चलती रहती है। यानि भारत में चार महीने बारिश का मौसम होता है। आम हवाएं जब अपनी दिशा बदल लेती हैं तब मानसून आता है। केरल के तट से सैकड़ों मील दूर मानसूनी हवाएं अपने साथ नमी लेकर आती हैं, जो धीरे-धीरे भारतीय महाद्वीप की ओर बढ़ती हैं। मानसूनी हवाएं ठंडे से गर्म क्षेत्रों की तरफ बहती हैं तो उनमें नमी की मात्रा बढ़ जाती है, जिस कारण बरिश होती है।

हिंद महासागर और अरब सागर की मानसूनी हवाएं हिमालय की ओर बढ़ने से पहले भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर पश्चिमी घाट से टकराती हैं तो केरल और दक्षिण भारत में पहले बारिश होती है। फिर इनमें से बची हुई मानसूनी हवाएं हिमालय की ओर बढ़ती हैं और फिर उत्तर-पूर्व भारत में भारी बारिश करती हैं। इस तरह पूरे भारत में बारिश का मौसम आ जाता है। ये सिलसिला जून से सितंबर तक चलता रहता है। भारत की जलवायु गर्म है, इसलिए यहां पर दो तरह की मानसूनी हवाएं चलती हैं। जून से सितंबर तक चलने वाली मानसूनी हवाएं दक्षिणी पश्चिमी मानसून कहलाती हैं, जबकि ठंडी में चलने वाली मानसूनी हवा, जो मैदान से सागर की ओर चलती है, उसे उत्तर-पूर्वी मानसून कहते हैं। यहां पर अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से ही होती है।

मानसून की अवधि 1 जून से 30 सितंबर यानी चार महीने की होती है। मानसून की भविष्यवाणी 16 अप्रैल से 25 मई के बीच कर दी जाती है। भविष्यवाणी के लिए भारतीय मानसून विभाग कुल 16 फैक्ट का अध्ययन करता है। 16 फैक्ट को चार भागों में बांटा गया है और सारे तथ्यों को मिलाकर मानसून के पूर्वानुमान निकाले जाते हैं।

अभागा बुनकर

सोमिलक की बात सुनने के बाद देवता ने कहा -यदि यही बात है, धन की इच्छा इतनी ही प्रबल है तो तू फिर वर्धमानपुर चला जा। वहां दो बनियों के पुत्र हैं; एक गुप्तधन, दूसरा उपभुक्त धन।

इन दोनों प्रकार के धनों का स्वरूप जानकर तू किसी एक का वरदान मांगना। यदि तू उपभोग की योग्यता के बिना धन चाहेगा तो तुझे गुप्त धन दे दूंगा और यदि खर्च के लिये धन चाहेगा तो उपभुक्त धन दे दूंगा...

गतांक से आगे...

सोमिलक ने कहा -मुझे वरदान में प्रचुर धन दे दो।

अदृष्ट देवता ने उत्तर दिया-धन का क्या उपयोग? तेरे भाग्य में उसका उपभोग नहीं है। भोग-रहित धन को लेकर क्या करेगा?

सोमिलक तो धन का भूखा था, बोला--भोग हो या न हो, मुझे धन ही चाहिये। बिना उपयोग या उपभोग के भी धन कि बड़ी महिमा है। संसार में वही पूज्य माना जाता है, जिसके पास धन का संचय हो। कृपण और अुलीन भी समाज में आदर पाते हैं।

सोमिलक की बात सुनने के बाद देवता ने कहा -यदि यही बात है, धन की इच्छा इतनी ही प्रबल है तो तू फिर वर्धमानपुर चला जा। वहां दो बनियों के पुत्र हैं; एक गुप्तधन, दूसरा उपभुक्त धन। इन दोनों प्रकार के धनों का स्वरूप जानकर तू किसी एक का वरदान मांगना। यदि तू उपभोग की योग्यता के बिना धन चाहेगा तो तुझे गुप्त धन दे दूंगा और यदि खर्च के लिये धन चाहेगा तो उपभुक्त धन दे दूंगा।

यह कहकर वह देवता लुप्त हो गया। सोमिलक उसके आदेशानुसार फिर वर्धमानपुर पहुंचा। शाम हो गई थी। पूछता-पूछता वह गुप्तधन के घर पर चला गया। घर पर उसका किसी ने सत्कार नहीं किया। इसके विपरीत उसे भला-बुरा कहकर गुप्तधन और उसकी पत्नी ने घर से बाहिर धकेलना चाहा। किन्तु, सोमिलक भी अपने संकल्पा का पक्का था। सबके विरुद्ध होते हुए भी वह घर में घुसकर जा बैठा। भोजन के समय उसे गुप्तधन ने रुखी-सूखी रोटी दे दी। उसे खाकर वह वहीं सो गया। स्वप्न में उसने फिर वही दोनों देव देखे। वे बातें कर रहे थे। एक कह रहा था -हे पौरुष! तूने गुप्तधन को भोग्य से इतना अधिक धन क्यों दे दिया कि उसने सोमिलक को भी रोटी दे दी । पौरुष ने उत्तर दिया-मेरा इसमें दोष नहीं। मुझे पुरुष के हाथों धर्म-पालन करवाना ही है, उसका फल देना तेरे अधीन है।

दूसरे दिन गुप्तधन पेचिश से बीमार हो गया और उसे उपवास करना पड़ा। इस तरह उसकी क्षतिपूर्ति हो गई।

सोमिलक अगले दिन सुबह उपभुक्त धन के घर गया। वहां उसने भोजनादि द्वारा उसका सत्कार किया। सोने के लिये सुन्दर शय्या भी दी। सोते-सोते उसने फिर सुना; वही दोनों देव बातें कर रहे थे। एक कह रहा था -हे पौरुष! इसने सोमिलक का सत्कार करते हुए बहुत धन व्यय कर दिया है। अब इसकी क्षतिपूर्ति कैसे होगी?

दूसरे ने कहा -हे भाग्य! सत्कार के लिये धन व्यय करवाना मेरा धर्म था, इसका फल देना तेरे अधीन है।

सुबह होने पर सोमिलक ने देखा कि राज-दरबार से एक राज-पुरुष राज-प्रसाद के रूप में धन की भेंट लाकर उपभुक्त धन को दे रहा था।

यह देखकर सोमिलक ने विचार किया कि - यह संचय-रहित उपभुक्त धन ही गुप्तधन से श्रेष्ठ है। जिस धन का दान कर दिया जाये या सत्कार्यों में व्यय कर दिया जाय वह धन संचित धन की अपेक्षा बहुत अच्छा होता है।

-समाप्त

• रोचक...

बांस...

वास्तव में बांस न झाड़ी की श्रेणी में आते हैं न पेड़ की। बांस तो एक किस्म की घास है। इसकी ऊंचाई 35 मीटर तक तथा मोटाई 40 सेंटीमीटर तक हो सकती है। इसका मुख्य तना जमीन के नीचे रहता है। जमीन के नीचे रहने वाले इस तने से ही शाखाएं निकलती हैं। इन शाखाओं के कारण ही हमें बांस का झुंड नजर आता है। यानि बांस तो घास का एक तिनका है। बांस के बढ़ने की गति बहुत तेज होती है। एक दिन में बढ़ने की इसकी गति 40 से 90 सेंटीमीटर तक देखी गई है। बांस के कुछ पौधे हर वर्ष फैलतें हैं, कुछ पौधे 30 से 100 वर्ष तक भी फैलते हैं। फैलने के बाद बांस का पौधा मर जाता है। इसके बीजों से नए पौधे उग आते हैं। बांस की अनेक किस्में होती हैं। वैज्ञानिक इसकी लगभग 600 किस्मों का अध्ययन कर चुके हैं। सभी किस्म के बांसों के तने चिकने और जोड़दार होते हैं। इससे ये तने सख्त और मजबूत हो जाते हैं। बांस सबसे अधिक दक्षिण-पूर्व एशिया, भारतीय उप-महाद्वीप और प्रशांत महासागर के द्वीपों पर पाए जाते हैं।

• तेज हवा...

तेज हवा के चलने से अधिक ठंड लगने का एक कारण और भी है। हमारी चमड़ी से वाष्प के रूप में नमी निकलती रहती है। इसके वाष्पीकरण के लिए ताप चाहिए। यह ताप हमारे शरीर के समीप की गर्म हवा की परत से मिलता है। यदि हवा स्थिर हो तो वाष्पीकरण की गति मंद होती है। वह इसलिए कि चमड़ी के पास की हवा वाष्प से जल्द ही तृप्त हो जाती है। लेकिन अगर हवा तेज चल रही है और हमारी चमड़ी को स्पर्श करती हुई गुजरती है तो वाष्पीकरण की गति अपनी प्रचंडता बनाये रखती है। तब इसके लिए अधिक ताप खर्च होता है, जो हमारे शरीर से ही लिया जाता है। इसलिए भी चलती हवा में हम स्थिर हवा के मुकाबले अधिक ठंड महसूस करते हैं।